

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

बालकनामा

अंक-68 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | नवम्बर, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

बाल अधिकार सप्ताह पर स्ट्रीट चिल्ड्रन ने खोले दिल के राज

“इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे” बच्चों की मौज-मस्ती और आजादी का दिन होता है। सम्पन्न घरों के बच्चे इस दिन अपने माता-पिता तथा दोस्तों के साथ मॉल तथा अच्छे-अच्छे स्थानों पर घूमने जाते हैं लेकिन अफसोस की बात है कि सड़क पर रहने वाले बच्चे इस दिन भी बालमजदूरी तथा हिंसा का शिकार होते हैं। इस दिन भी अपने कामकाज में लिप्त रहते हैं। बच्चे देश के भविष्य हैं, इनके संपूर्ण विकास के बारे में चिंतन करना तथा कुछ ठोस प्रयास करना देश की अहम जिम्मेदारी है। देश का समुचित विकास बच्चों के विकास से ही संभव है। बच्चों को शिक्षित बनाने, बाल श्रम पर अंकुश लगाने, उनके पोषण का उचित ध्यान रखने तथा उनके चारित्रिक विकास के लिए प्रयास करने की जिम्मेदारी समाज और सरकार दोनों की है। बालकनामा के पत्रकारों ने अलग-अलग स्थानों पर जाकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जानना चाहा कि इन बच्चों के मन में ऐसी कौन सी बातें हैं, जो वो लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं जिनकी वजह से वे अपने कामकाज में लिप्त होने के कारण आजाद नहीं हो पाते हैं। इसलिए वह अपनी इच्छाओं को मन में ही दबाकर रखते हैं। पेश है बच्चों की इच्छा-कहानी, बच्चों की ही जुबानी।

दक्षिण दिल्ली के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा



10 वर्षीय अंनू अपने परिवार के साथ सांसी कैंप में रहती है लेकिन इनके घर की आर्थिक स्थिति खराब होने से स्कूल नहीं जा रही है। अंजू चाहती है इस 'इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे' के अवसर पर कोई व्यक्ति मेरा स्कूल में दाखिला दिला दे ताकि मैं अपना भविष्य बना सकूँ।



12 वर्षीय करन, जो बदरपुर बोर्डर की झुग्गियों में रहता है, ने अपनी पीढ़ा बताते हुए कहा कि हमारी झुग्गियों के पास रेलवे लाईन है जिस पर बहुत तेज रफ्तार में रेलगाड़ी का आना जाना होता है रेलगाड़ी की आवाज भी बहुत तेज होती है। जिसकी वजह से हम अपने घर में पढ़ाई लिखाई नहीं कर सकते। खेलने के लिए पार्क नहीं हैं अतः हमें रेलवे ट्रेक के बीच खेलना पड़ता है। हमें हर वक्त बस यही भय लगा रहता है कि हमारे साथ और अन्य बच्चों के साथ कोई खतरनाक दुर्घटना ना हो जाए।



12 वर्षीय मंगल ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बताते हुए कहा कि मेरी झुग्गियों में पानी का साधन नहीं है इसलिए मैं चाहता हूँ कि इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई ऐसा व्यक्ति हमारी परेशानियों को सुने और हमारी मदद करे, ताकि हम बच्चों को पानी के लिए दरदर भटकना नहीं पड़े।



9 वर्षीय पूजा ने अपनी पारिवारिक स्थिति बताते हुए कहा कि मेरे घर की स्थिति इतनी खराब है कि मेरी माता तथा भाई-बहन को भीख मांगकर अपना गुजारा करना पड़ता है। मैं चाहती हूँ कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई बड़े भईया-दीदी मेरा सहयोग करें, ताकि हमारे परिवार को भीख ना मांगनी पड़े। क्या आप हमारी सहायता करेंगे ?



8 वर्षीय प्रीति ने अपनी स्थिति बताते हुए कहा कि जिस झुग्गी में मैं रहती हूँ वहां बिजली का कोई प्रबंध नहीं है इसलिए हम बच्चों को रात के समय पढ़ाई करने में बहुत तकलीफ होती है। अतः इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर हम बच्चे चाहते हैं कि हमारी इस समस्या का कोई भईया-दीदी जल्द से जल्द समाधान कराने का कष्ट करें ताकि हमें पढ़ाई करने में कोई परेशानी नहीं हो।



15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि मेरे परिवार में कुल चार सदस्य हैं पापा की मृत्यु हो गई है। पापा की मृत्यु के बाद मम्मी का व्यवहार बदल गया है। वह पूरे दिन झंझर-उधर घूमती रहती है और दूसरे लोगों के साथ शराब पीती रहती है, इस वजह से हम तीनों भाई-बहनों को पूरे दिन भूखे रहना पड़ता है। मैं चाहती हूँ कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर हम तीनों भाई बहनों के लिए कुछ ऐसा प्रबंध किया जाए कि हमें भूखे पेट ना रहना पड़े। क्या आप करेंगे हमारी मदद ?



10 वर्षीय सूरज का कहना है कि हम जैसे ना जाने कितने बच्चे स्टेशन तथा सड़क पर रहते हैं। वे नशे की बूरी दुनिया में प्रतिदिन आगे बढ़ते ही जा रहे हैं, इसलिए मैं इस खास मौके पर अपनी बात रखते हुए कह रहा हूँ कि अगर कोई भईया-दीदी हमारी मदद करना चाहते हैं तो इस नशे को बंद करवाने की कोशिश करें।



13 वर्षीय रूस्तम सराय काले खां रैन बसेरा में रहता है उसकी पारिवारिक स्थिति इतनी खराब है कि घर के सभी सदस्यों को भीख मांगनी पड़ती है। रूस्तम को डांस में बहुत ज्यादा दिलचस्पी है। वह चाहता है कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई भईया-दीदी मेरा डांस क्लास में दाखिला करा दे, क्योंकि मैं इस परिस्थिति से गुजरते हुए भी अपने हुनर को लोगों के सामने लाना चाहता हूँ।

बातूनी रिपोर्टर संगीता रूस्तम व रिपोर्टर ज्योति



11 वर्षीय जावेद, सराय काले खां पुल के नीचे अपने परिवार के साथ रहता है। जावेद ने अपने परिवार की पीढ़ा बताते हुए कहा कि पुल के नीचे से हम जैसे बच्चों तथा परिवार को भगाया जा रहा है हमारे रहने-सोने का कोई ठिकाना नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस अवसर पर हम बच्चों के लिए एक ऐसा सुरक्षित स्थान का प्रबंध किया जाए ताकि हमें दरदर भटकना ना पड़े।



13 वर्षीय पहलाद ने अपने मोहल्ले की परेशानी बताते हुए कहा कि हमारे मोहल्ले में एक भी शौचलय नहीं है इसलिए सभी बच्चे खुले में जंगल में शौच के लिए जाते हैं। विशेष कर लड़कियों को परेशानी होती है इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे मोहल्ले में शौचलय का प्रबंध किया जाए, ताकि हम बच्चे शौच करने के लिए हम बच्चों को जंगल ना जाना पड़े।

पश्चिम दिल्ली के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा



14 वर्षीय कोमल अपनी दुनिया के रीतिरिवाज बताते हुए कह रही है कि आज भी ऐसी कई लड़कियां हैं जो दहेज के चंगुल में फंसकर अपनी जिंदगी बिता रही हैं। मैं यह चाहती हूँ कि इस दहेज जैसे सिस्टम को जड़ से खत्म किया जाए, ताकि हम लड़कियों को इस तरह की कठिनाईयों का सामना ना करना पड़े।



14 वर्षीय रोहित ने अपनी स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि अभी भी हमारे समाज में लड़का और लड़कियों में भेदभाव किया जा रहा है। आज भी कई ऐसे परिवार हैं जो अपने शिशु की भ्रूणहत्या करा देते हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि ये भ्रूणहत्या बंद की जाए।



13 वर्षीय अमन ने अपने भविष्य के बारे में बताते हुए कहा कि मैं जिस जगह पर रह रहा हूँ वहां आये दिन सरकारी कर्मचारी बिना नोटिस के हमारी झुगियां तोड़ देते हैं। इस कारण हम बच्चों को हर बार जगह बदलनी पड़ती है, क्योंकि हमारे पास इतने पैसे नहीं होते हैं कि हम अच्छी जगह एक किराए पर कमरा लेकर रह सकें। इसलिए हम अपने गांव वापस चले जाते हैं जिससे हमारी पढ़ाई नहीं हो पाती है। इसलिए हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर सरकार हमारी पढ़ाई का अधिकार ना छीने।



9 वर्षीय अमित ने रोज झेलने वाली पीढ़ा को बताते हुए कहा कि हमारे यहां पर कई ऐसे घर हैं जिनके घर का खर्चा फेरी लगाकर ही चलता है। अधिकतर संख्या में बच्चे भी फेरी के कार्य में पाए जा रहे हैं जिसकह बदलौत इन मासूमों को शिक्षा से वंचित होना पड़ रहा है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि कोई भईया-दीदी हमारे माता-पिता को अच्छा रोजगार दे, ताकि हम बच्चों का पालन-पोषण अच्छे से हो सके।



12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने वर्तमान स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हमारी बस्ती में काफी लोग ऐसे हैं जो बच्चों से नशे का व्यापार करवाते हैं इसलिए मैं चाहती हूँ कि इस नशे को बंद कर दिया जाए, ताकि और बच्चे इस चंगुल में ना फंसे।



10 वर्षीय रंजीत ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि मैं कामकाजी बच्चा था, मैं इस विशेष मौके पर यही बोलना चाहता हूँ कि जब भी सरकार कोई कानून तथा नियम बनाती है तो हम बच्चों से राय लेनी चाहिए।



9 वर्षीय रोहित ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों का जिक्र करते हुए कहा कि जो पुल के नीचे रहते हैं उन्हें पुलिस परेशान करती है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इनके लिए कुछ प्रबंध किया जाए, जहां चे अपने परिवार के साथ खुशी से रहें।



13 वर्षीय निशा ने बताया कि पारिवारिक स्थिति का गुजारा करने के लिए इनके परिवार के सभी सदस्य कपड़े की फेरी करते हैं। इसलिए निशा चाहती है कि मैं अपनी जिंदगी अपनी आजादी से जियूं।



12 वर्षीय पूजा ने वर्तमान स्थिति को देखते हुए कहा कि हमारे समाज में अभी भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों को देखकर अनदेखा व भेदभाव किया जाता है इसलिए मैं ये चाहती हूँ कि कोई भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों से भेदभाव ना करे।



11 वर्षीय आरती ने अपनी विचार धारा को बताते हुए कहा कि अभी भी हमारे समाज में लड़कियों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि इस तरह का व्यवहार हम लड़कियों के साथ नहीं किया जाए। हम लड़कियों को भी समाज में समानता देनी चाहिए।

बातूनी रिपोर्टर व रिपोर्टर दीपक व चेतन

नोएडा के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा

बातूनी रिपोर्टर पंकी नोबीयून व रिपोर्टर शम्भू



11 वर्षीय गुड्डू ने अपनी पारिवारिक स्थिति बताते हुए कहा कि मेरा परिवार इतना गरीब है कि बिहार से नोएडा आए पैसे कमाने के लिए लेकिन यहां आने के बाद भी कमाई का कोई ठिकाना नहीं है। हमारे माता-पिता पैसे कमाने के लिए दरदर भटकते हैं, तब जाकर दो पैसे कमा पाते हैं और जितना भी हमारे माता-पिता पैसे कमाते हैं उनमें से आधे पैसे हमें झुग्गी के मालिकों को देना पड़ता है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस अवसर पर हमारे परिवार वालों के लिए ऐसा बंदोबस्त किया जाए, ताकि हमारे माता-पिता को झुग्गी का किराया ना देना पड़े।



13 वर्षीय यशपाल ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हम बच्चों को पढ़ाई-लिखाई करने का कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि हमारे जो माता-पिता कार्य करते हैं वह बेलदारी का है। इस कार्य में हमारे माता-पिता को हर एक वर्ष में दो तीन बार स्थान बदलने पड़ते हैं। इसकी बदलौत हमारा स्कूल में दाखिला तथा सही मार्गदर्शन में पढ़ाई नहीं हो पा रही है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि कोई भईया-दीदी हमारे माता-पिता को ऐसा कार्य दिलाए ताकि हम बच्चों को रहने का ठिकाना मिल जाए और हम अपना भविष्य पढ़ाई लिखाई के माध्यम से अच्छा बना सकें।



13 वर्षीय अजय नोएडा में बसी एक बस्ती सरफाबाद में अपने परिवार के साथ रहता है। अजय ने अपनी दासता बताते हुए कहा कि जितनी मेरी आयु है इसके मुताबिक मेरा स्कूल में दाखिला नहीं हुआ है, क्योंकि मेरा दाखिला वर्तमान में पांचवी कक्षा में हुआ है जिसकी वजह मुझे छोटे छोटे बच्चों के साथ पढ़ाई करनी है और जो विषय हमारे अध्यापिका मुझे पढ़ाती हैं वह मुझे पहले ही आता है। मैं इस मौके पर चाहता हूँ कि मेरी आयु के मुताबिक कक्षा-7 में दाखिला दिया जाए।



13 वर्षीय प्रमोद, नोएडा सेक्टर 74, सरफाबाद में रहता है। प्रमोद मानसिक तथा शारीरिक रूप से पीड़ित है। प्रमोद की मां ने अपने दुखों की दासता बताते हुए कहा कि मेरे पति की दो साल पहले मृत्यु हो चुकी है इसलिए मैंने दूसरी शादी की, ताकि मैं अपने बच्चे का इलाज करा सकूँ, लेकिन शादी करने के बाद भी इस परेशानी का हल नहीं निकला और प्रतिदिन प्रमोद की हालत बिगड़ती जा रही है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि मेरे बच्चे को इस दुख दासता से मुक्ति मिले। मैं खुद बेलदारी करके मुश्किल से दो पैसे कमा पाती हूँ।



8 वर्षीय आफताव ने अपने जिंदगी की दासता बताते हुए कहा कि मेरे माता पिता बहुत गरीब हैं, इसलिए हम बच्चों से कूड़ा कबाड़ा चुनवाने का कार्य करवाते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि इस खास मौके के अवसर हम बच्चों की आवाजों को सुनें और हमारे माता पिता को रोजगार दिया जाए, ताकि हम बच्चों कूड़ा कबाड़ा चुनना ना पड़े।



11 वर्षीय आरिफ ने अपनी पारिवारिक स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि मेरा परिवार बहुत गरीब है जिसकी वजह से मेरी जो कल्पना है कि मैं पब्लिक स्कूल में पढ़ाई करूँ, वह पूरी नहीं हो पा रही है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर ये मेरा अधूरी मनोकामना पूरी हो।



10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजू जो नोएडा की एक बस्ती में रहता है, अपने माता की देखरेख करने के लिए खुद गैरेज में कार्य करता है। राजू अपने दुखों की पीड़ा बताते हुए कहता है कि मेरी मम्मी का व्यवहार ठीक ना होने के कारण सभी बस्ती वाले तथा बच्चे मुझे ताने मारते हैं, इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी मम्मी के व्यवहार में सुधार ला सकूँ, ताकि लोग मुझे ताने नहीं मारें और मुझसे सभी बच्चे स्नेह से बातें करें।



15 वर्षीय सुहाना जो नोएडा सेक्टर 74 सरफाबाद में रहती है, इन्होंने अपनी वर्तमान स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहा, हम 10-12 लड़कियां निवास में छोटे-छोटे बच्चों को सम्भालने का कार्य करती हैं, क्योंकि हमारे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और दूसरी बात यह है कि हम सभी लड़कियों को इस कार्य में संतुष्टि नहीं है, इसलिए हम आगे बढ़ने के लिए सिलाई का कोर्स करना चाहते हैं, ताकि हाथ का हुनर सीख सकें और हमारा भविष्य उज्ज्वल हो।



14 वर्षीय जसीम ने अपनी वर्तमान स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि मैं जिस कार्यशाला में कार्य करता हूँ उस कार्यशाला में बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो हिंदी बोलते हैं और जो कि मुझे नहीं आती है, क्योंकि मैं बंगाल से बिलोंग करता हूँ और मेरे घर की स्थिति खराब है। बिल्डर कार्यशाला में स्टाफ को पानी पिलाने का कार्य करना पड़ता है इसलिए मैं चाहता हूँ कि कोई भईया-दीदी मेरे घर पर एक अध्यापक भेजे ताकि वह मुझे हिंदी तथा इंग्लिश का मार्गदर्शन करा सके।



11 वर्षीय मोनू, नोएडा सेक्टर 49 में अपने परिवार के साथ रहता है, ने बताया कि घर का खर्चा चलाने के लिए मोनू तथा इनके माता पिता कूड़ा कबाड़ा बीनने का कार्य करते हैं और मुझे स्कूल पढ़ाने में आसमर्थ है, जिस स्थान में मैं रहता हूँ वहां से काफी सारे बच्चे स्कूल जा रहे हैं। मेरा भी मन करता है स्कूल जाने का। लेकिन इस परिस्थिति के कारण मैं स्कूल नहीं जा पा रहा हूँ, क्या आप में से कोई भईया-दीदी मुझे स्कूल तक ले जाने में मदद करेंगे।

बादशाहपुर (गुड़गांव) के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा

बातूनी रिपोर्टर राजू ए मंजी व रिपोर्टर शम्भू



8 वर्षीय हसन अली ने वर्तमान स्थिति बताते हुए कहा कि मेरे माता-पिता सुबह आठ बजे ही काम करने के लिए बाहर चले जाते हैं। मेरे घर में जो तीन छोटे-छोटे भाई-बहन हैं उनको मैं पूरे दिन सम्भालता हूँ। इसलिए मैं बाहर खेल नहीं पा रहा हूँ न ही पढ़ाई लिखाई कर पा रहा हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस खास मौके पर कोई मदद करे और मेरे लिए घर पर ही एक अच्छा अध्यापक भेज दे, ताकि मैं भी दूसरे बच्चों की तरह पढ़ाई-लिखाई कर सकूँ।



13 वर्षीय राजू, जो बादशाहपुर की एक झुग्गी झोपड़ी में रहता है और अपने पारिवारिक गुजारे के लिए चाय की दुकान लगता है। राजू का सपना है कि जिस तरह हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भूतकाल में चाय बेचते थे और वर्तमान में प्रधानमंत्री बन चुके हैं, तो मैं आगे क्यों नहीं बढ़ सकता हूँ। राजू को आगे बढ़ने के लिए वर्तमान में कोई भी सहयोग नहीं कर रहा है इसलिए राजू चाहता है कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई व्यक्ति मेरी मदद करे, ताकि मेरा पब्लिक स्कूल में दाखिला हो सके, तभी तो मैं आने वाले भविष्य में नेता बन पाऊंगा।



7 वर्षीय मानव, जो बहुत ही चतुर व होनहार है, बादशाहपुर की झुग्गी बस्ती में काफी मशहूर है। सब लोग मानव से काफी स्नेह करते हैं। बादशाहपुर की झुग्गी में रहने वाले लोगों ने बताया कि मानव पूरे दिन इधर-उधर घूमता रहता है। इसकी माता को जरा भी परवाह नहीं है कि मेरा बच्चा कहाँ है, कहाँ गया? इसलिए लोग चाहते हैं कि मानव की एक ऐसे स्थान पर परवरिश की जाए, जहाँ मानव पढ़ाई-लिखाई कर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सके।



11 वर्षीय मंजी अपनी नन्हीं आंखों में डॉक्टर बनने का सपना सजाए बैठी है। मंजी चाहती है कि मैं बड़े होकर एक अच्छी डॉक्टर बनूँ, ताकि मैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों का सही इलाज कर सकूँ, लेकिन यह सपना साकार करना बहुत कठिन बनता जा रहा है, क्योंकि मंजी के माता-पिता अत्यधिक गरीब हैं इसी गरीबी की वजह से मंजी अच्छी तरह से पढ़ाई नहीं कर पा रही है।



13 वर्षीय जहांगीर गरीब परिवार से विलोंग करता है। परिवार की गुजर-बसर करने के लिए जहांगीर सब्जी की दुकान पर कार्य करता है लेकिन जहांगीर का सपना है कि बड़ा होकर एक पुलिस अधिकारी बनें, लेकिन गरीबी हालात होने के कारण से मजबूर होने की वजह से इनका सपना टूटता ही जा रहा है इसलिए जहांगीर चाहता है कि इस विशेष अवसर पर कोई मेरा सपना साकार करने में सहयोग करे।



10 वर्षीय सूरज ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि मेरे पिता का पिछले रक्षाबंधन के दिन रेलवे हादसा होने के कारण एक पैर कट गया, तब से मुझे ही पिता का ख्याल रखना पड़ता है। इसलिए मेरी मम्मी घर का खर्चा चलाने के लिए कोठियों में कार्य करने जाती हैं। मुझे ही अपने पापा की देखरेख करनी पड़ती है। मैं चाहता हूँ कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई मेरे घर की आर्थिक स्थिति में मदद करे, ताकि मैं अपने जीवन में आगे बढ़ सकूँ।



13 वर्षीय जहीर जो बादशाहपुर की झुग्गी में रहता है और अपने घर का खर्चा चलाने के लिए कूड़ा-कबाड़ा बीनने का कार्य करता है इसलिए जहीर को कुछ बच्चे कबाड़ी कहकर चिड़ते हैं इससे जहीर को बहुत बुरा लगता है जहीर चाहता है कि कोई भईया-दीदी मेरे परिवार को मदद करें ताकि मुझे कूड़ा कबाड़ा बीनने की जरूरत ना पड़े।



8 वर्षीय शिवानी ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि मैं चाहती हूँ कि इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर कोई भईया दीदी मेरी मदद करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई करने का सपना पूरा कर सकूँ, क्योंकि हमारी जाति में अभी लड़कियों को घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं जिसकी वजह से हम लड़कियां पढ़ाई से वंचित हो रही हैं।



8 वर्षीय देव जो बादशाहपुर की एक झुग्गी में अपने परिवार के साथ रहता है। इनके परिवार की संख्या अधिक होने के कारण इनके माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोच नहीं पा रहे हैं, इसलिए देव चाहता है कि कोई भईया हमारा स्कूल में दाखिला दिला दे, ताकि मैं अपने आने वाले भविष्य को उज्ज्वल बना सकूँ।



8 वर्षीय राजू अपने परिवार की गुजर-बसर करने के लिए माता पिता के साथ कड़ी मेहनत करता है तब जाकर राजू के परिवार का गुजारा हो पाता है। राजू का सपना है कि वह इंजीनियर बने, लेकिन गरीबी के कारण यह सपना पूरा नहीं हो पा रहा है, अगर कोई इस इंटरनेशनल चिल्ड्रन डे के अवसर पर राजू का अच्छे पब्लिक स्कूल में दाखिला तथा घर का खर्चा चलाने में सहयोग करे, तो राजू का सपना साकार हो सकता है।

आगरा के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा



12 वर्षीय तंजु जो आजमपाड़ा में रहती है उसने अपने परिवार की स्थिति बताते हुए कहा कि मेरा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए मजबूरन मुझे भीख मांगनी पड़ती है, लेकिन मुझे भीख मांगना पसंद नहीं है। अगर कोई पारिवारिक स्थिति सुधारने में मेरा सहयोग करे तो मैं भीख मांगना छोड़ सकती हूँ।



14 वर्षीय सारिका ने अपनी दुख भरी दांसता बताते हुए कहा कि मेरे घर में दो छोटे-छोटे भाई-बहन हैं। इनका पालन-पोषण करने के लिए मुझे कोठी में काम करना पड़ता है, क्योंकि मेरे पिता पूरे दिन शराब की अंधेरी दुनिया में लिप्त रहते हैं इसलिए मैं तो पढ़ाई-लिखाई नहीं कर सका। लेकिन मैं अपने छोटे भाई-बहन को पढ़ाना चाहती हूँ। इसके लिए अगर मुझे किसी का सहयोग मिल सके तो मेरा सपना पूरा हो जाएगा।



14 वर्षीय मुस्कान ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं लालडिग्गी में रहती हूँ। मेरे पापा फर्नीचर की दुकान में कार्य करते हैं। दुकान से जो भी पैसे मिलते हैं उन्हें शराब पीकर उड़ा देते हैं। इसलिए मैं पूरे दिन रेलगाड़ी में तरह-तरह के खिलौने तथा खाने-पीने वाले पदार्थ बेचकर घर का खर्च चलाती हूँ। मेरा सपना है कि मैं सिलाई मशीन का कोर्स करूँ, लेकिन पारिवारिक स्थिति खराब होने की वजह से यह सपना पूरा नहीं हो पा रहा है। क्या आप मेरी मदद करेंगे।



14 वर्षीय स्नेहा अपनी नन्हीं आंखों में आध्यापिक बनने का ख्वाब सजाए बैठी है लेकिन परिवार में कोई भी बड़ा सदस्य कमाने वाला न होने के कारण स्नेहा खुद कोठी में काम करने जाती है और इसकी मम्मी रेलवे स्टेशन पर खिलौने तथा अन्य प्रकार के खाने-पीने के पदार्थ बेचती है। स्नेहा चाहती है कि मेरा यह सपना पूरा हो।



10 वर्षीय अंकित अपने परिवार की स्थिति बताते हुए कहता है कि मेरा सपना था कि मैं एक अच्छे स्कूल में पढ़ाई करूँ और अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाऊँ, लेकिन घर की हालातों को देखते हुए मैंने अपने सपने को कुर्बान कर दिया और शादी-पार्टी के कार्य में करने लगा। मुझे अभी भी उम्मीद है कि अगर कोई भईया-दीदी मुझे सहयोग करेंगे तो मेरा सपना साकार हो सकता है।



10 वर्षीय मोन्टी दुखभरी दांसता बताते हुए कहता है कि मेरी मम्मी की तबियत बार-बार खराब होती रहती है, इसलिए मुझे जूते के कारखाने में काम करना पड़ता है। घर का खर्चा चलाने के लिए कोई नहीं है। पापा हैं भी, तो वह रिकशा चलाते हैं लेकिन जो भी पूरे दिन कमाई करते हैं, उसे शराब पीकर उड़ा देते हैं। मेरा बचपन से सपना है कि मैं पढ़ाई-लिखाई करके इंजीनियर बनूँ। लगता है यह सपना सपना ही बनकर रह जाएगा।



12 वर्षीय आदित्य ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि दो साल पहले मेरे पिताजी की मृत्यु हो गयी, तब से मेरे परिवार में दुख का ग्रहण ही लग गया है। वर्तमान में घर का खर्चा चलाने के लिए मैं शादी-पार्टी का कार्य करता हूँ और मेरी मां रेलवे स्टेशन पर खिलौने तथा चने बेचती है। मेरा सपना है कि मैं अच्छे स्कूल में पढ़ाई करूँ। अगर कोई भईया-दीदी मेरे परिवार को चलाने में सहयोग करे तो मैं पढ़ाई कर सकता हूँ।



10 वर्षीय बांशिका अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि मेरा सपना था कि मैं बैंक मनेजर बनूँ लेकिन अतिगरीबी होने के कारण यह सपना देखना असान नहीं है क्योंकि वर्तमान में और मेरे छोटे-छोटे भाई-बहन पायल पर पीस चिपकाने का कार्य करता है और मेरे पिता जूते का काम करते हैं तभी भी घर खर्चा पूरी नहीं हो पाता है क्योंकि जिस कमरा में हमलोग रह रहे हैं वह भी किराए पर है इतना गरीबी होने के बाद मैं कैसे अपने सपनों को पूरा कर सकता हूँ।



10 वर्षीय निशा अपनी पीढ़ा कि बताते हुए कहा कि मैं पूरे दिन पायल पर पीस चिपकाने में गजार देती हूँ, पायल पर पीस चिपकाते वक्त मेरी आंखों में दर्द होने लगता है मैं चाहती हूँ कि यह काम छोड़कर पढ़ाई-लिखाई करूँ लेकिन घर का स्थिति खराब होने के कारण पढ़ाई करना मुश्किल हो रही है।

बातूनी रिपोर्टर आकाश, वर्षा व रिपोर्टर पूनम

बालकनामा के पत्रकारों ने जाना

आखिर क्यों बच्चे व इनके माता पिता दर-दर भटकते हैं

रिपोर्टर शम्भू, ज्योति, वेतन व दीपक

बालकनामा के पत्रकारों ने दक्षिण दिल्लीए पश्चिम दिल्ली तथा आगरा में दौरा कर यह खोज निकाला कि आखिर यह घूमंतु बच्चे कहां से आ रहे हैं और लालबत्ती तथा सड़क पर क्यों घूम रहे हैं। इसी विषय की खोजबीन में पत्रकार उस स्थान पर जा पहुंचा जहां घूमंतु बच्चे अधिक संख्या में पाए जाते हैं। खोजबीन करने पर पता चला कि यह सभी बच्चे अपने माता-पिता के साथ अलग-अलग स्थान से आए हुए हैं, जैसे कि बिहार, बंगाल, नेपाल, अलीगढ़, झारखंड, पंजाब, उत्तर प्रदेश गोंडा इत्यादि। यह सभी दिल्ली के विभिन्न फ्लाई ओवरों के नीचे रह रहे हैं। जब पत्रकार ने इन से बातचीत की तो पता चला कि इनके गांव में अतिगरीबी होने के कारण इनके माता-पिता इधर उधर भटकते रहते हैं। इधर-उधर भटकते हुए ही वे यहां आ पहुंचे हैं। इन्हें में से एक 32 वर्षीय श्री अरूण जी ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हमलोग बंगाल के रहने वाले हैं। एक बार बंगाल में बहुत तेज बाढ़ आई जिसकी वजह से हमारा घर-द्वार टूट-फूट गया और घर-द्वार टूटने की वजह से रहने का कोई ठिकाना नहीं था। हम अपने बच्चों के साथ रात दिन इधर उधर भटकते रहते थे लेकिन कोई हमारे परिवार की मदद करने के लिए आगे नहीं आया, फिर हम लोगों ने तय लिया कि अब हमलोग दिल्ली चलते हैं। वहीं पर कमाने-खाने का गुजारा हो सकता है; परंतु दिल्ली आने पर भी इस समस्या से छुटकारा नहीं मिला। दिल्ली आने के बावजूद भी काम नहीं मिला है। वर्तमान में पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनने का कार्य करते हैं। इसी तरह पत्रकार ने कुछ अन्य माता-पिता से भी बातचीत की। 32 वर्षीय श्री राजेश जी ने बताया कि हमारे बच्चे इधर-उधर इसलिए भटक रहे हैं, क्योंकि हम सभी का रहने और काम करने का कोई ठिकाना नहीं है। हम सभी लोग बेलदारी का काम करते हैं। हमारा काम एक दिन चलता है तो पांच दिन बंद रहता है। इस कारण हमारे



माता पिता के सुझाव



जहां-तहां भीख मांग रहे बच्चों के माता-पिता से बालकनामा की पत्रकार टीम ने बच्चों की दशा सुधारने के संबंध में सुझाव मांगे। इस संबंध में 28 वर्षीय श्रीमती शीला जी ने अपने बच्चों के बारे में बताते हुए कहा कि हमारे बच्चे दरदर भटक रहे हैं और सड़कों पर खेल दिखाकर भीख मांग रहे हैं। भीख मांगते वक्त हमारे बच्चों को

आते जाते लोग अश्लील बातें बोल जाते हैं। यह देखकर हमारे मन में सवाल उठता है कि हमारे बच्चों को लोग इज्जतदार ज़िंदगी क्यों नहीं देते हैं ? मैं चाहती हूँ कि इस तरह का व्यवहार किसी भी बच्चे के साथ ना किया जाए। अगर आपको कोई भी ऐसा बच्चा मिले, जिसको बहुत ज्यादा मदद की जरूरत है तो आप उसकी जरूर मदद करें।

48 वर्षीय श्रीमती रानी जी का कहना है कि मध्य प्रदेश के लोग अशिक्षित होने के कारण वह दिल्ली जैसे शहरों में पूरे परिवार के साथ फुटपाथों पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं और मंदिर-मस्जिद पर भीख मांगने के लिए जाते हैं। जब इन्हें फुटपाथ पर से भगाते हैं तो यह दूसरी जगहों पर डेरा जमा लेते हैं। हम यह चाहते हैं कि हमें भी दिल्ली जैसे शहरों में सुरक्षित रहने के लिए स्थान दिया जाए और हमारे बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की जाए, जिससे कि हम और हमारे बच्चे अपने भविष्य को सुधार सकें और समजा में इज्जत के साथ ज़िंदगी जी सकें।

घर परिवार और हमारे बच्चों का गुजारा नहीं हो पाता है। इसीलिए मजबूरी में हम अपने बच्चों को अलग-अलग स्थानों पर भीख मांगने और कबाड़ा बीनने के लिए भेजते हैं, और अन्य स्थानों पर घूमंतु लोगों की तरह अलग-अलग झुग्गी-झोपड़ियों में गुब्बारे व खिलौने बेचने के लिए भेजते हैं।

34 वर्षीय श्रीमती बिमला देवी जी ने कहा कि हमने और हमारे छोटे-छोटे मासूम बच्चों ने अपनी ज़िंदगी में बहुत सी ऐसी जगह हैं जो बदली हैं; फिर भी हम सभी को रहने का कोई ठिकाना नहीं मिला। इसी वजह से हमने निर्णय लिया कि अब हम फ्लाई ओवर के नीचे ही रहेंगे। फ्लाई ओवर

के नीचे रहने पर भी हमारे बच्चों को ऐसी-ऐसी परेशानी आती है, जो हम बता नहीं पा रहे हैं। जैसे हमारी बड़ी लड़कियां रात के समय जब सोती हैं, तो आने-जाने वाले लोग हमारी लड़कियों पर गंदी नजर डालते हैं और इनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। जब हमें एक स्थान पर परेशानी होती है इसलिए हम उस स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान बदलते हैं, इसी कारण हमें लोग घूमंतु के नाम से पुकारते हैं। इसी तरह माता पिता से बात करते हुए पत्रकार बच्चों तक पहुंचें जो सड़क पर उदास बैठे हुए थे। इन बच्चों की उदासी के राज जानने के लिए पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत करनी चाही लेकिन यह बच्चे पत्रकार को देखकर भागने लगे। यह देखकर पत्रकार ने सभी बच्चों को रुकने के लिए कहा और अपने पास बुलाया। अपने बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आप बच्चे डरो मत हम आप बच्चों के लिए कार्य करते हैं। यह बात सुनते ही 14 वर्षीय हरपाल ने बताया कि भईया हम बच्चों से काफी भईया-दीदी बात करने आए हैं लेकिन वह हमारी परेशानी को देखकर मजाक उड़ाते हैं। उनको लगता है कि इधर-उधर भटकने का हमारा पेशा है, इसलिए हम बच्चे किसी को अपनी बात नहीं बताते हैं। पत्रकार ने सभी बच्चों को समझाते हुए कहा कि हम उन भईया दीदी की तरह नहीं हैं। आप सभी अपनी परेशानी हमें बता सकते हैं। हम आप से यह जानना चाहते हैं कि आप सभी यहां पर इतने उदास क्यों बैठे हो ? तभी 15

वर्षीय सचिन ने बताया कि हम बच्चे इतने उदास इसलिए बैठे हैं कि सुबह से दोपहर हो गई है, पर हमें खाने को कुछ भी नहीं मिला है। हम भूख के मारे तड़प रहे हैं। इसलिए हम बच्चे पास में ही एक बाजार है, उस बाजार में एक बहुत बड़ा मॉल है। वहां पर बाहर के लोग घूमने-फिरने आते हैं। वह अपने खाने के लिए कुछ ना कुछ खरीदते हैं लेकिन वह लोग थोड़ा बहुत खाकर बाकी बचा हुआ खाना कूड़ेदान में फेंक देते हैं। उसी खाने को हम कूड़ेदान में से निकालकर खा लेते हैं। इसी खाने से हम अपना पेट भर लेते हैं लेकिन दुख की बात यह है कि इस बाजार के कुछ गाई अंकल बहुत दुष्ट हैं वह हम सभी बच्चों को डंडे से मारने के लिए दौड़ते हैं। इसलिए हम बच्चे इधर-उधर घूमते रहते हैं, ताकि हम बच्चों को खाने को कुछ मिल जाए। भूतकाल में हम बच्चे इसी परेशानी से जूझते हुए भीख मांगने का काम शुरू किया लेकिन पब्लिक हम बच्चों को भीख नहीं देती थी और पब्लिक हम बच्चों को इस तरह कि बात बोलती है कि तुम बच्चों को कोई कामकाज नहीं है, जो भीख मांगने निकल पड़े हो ?

वे यह भी कहते हैं कि इनका तो रोज का पेशा है भीख मांगने का। यह बात सुनकर हम बच्चे चिंतित होकर फिर दरदर भटकने लगे। ना तो हमें कोई भीख देने को तैयार, ना ही कोई खाना और ना ही इज्जतदार ज़िंदगी। इसी विषय को लेकर बच्चों ने सोचा कि जब दरदर भटककर हम अपनी परेशानी को दूर नहीं कर पा रहे हैं, क्यों ना हम चोरी चकारी करना शुरू कर दें। वर्तमान में बच्चों ने चोरी करना शुरू कर दिया है। लेकिन चोरी करने के बाद हमारे पास जो पैसे होते हैं, उसे हम अपने पास रखते हैं। जब हम शाम के वक्त अपने घर के लिए निकलते हैं तो रास्ते में ही एक बहुत बड़ा जंगल है। उस में कुछ बड़े व्यक्ति हैं जो नशीले पदार्थ में हर वक्त लिपट रहते हैं। यही लोग रास्ते में हम बच्चों से पैसे छीन लेते हैं और मारपीट भी करते हैं। इसी वजह से हम बच्चों ने चोरी करना भी बंद कर दिया है।

क्या आप दे पाएंगे इनके सवालों का जबाब

बातूनी रिपोर्टर रोशनी व रिपोर्टर दीपक

पश्चिम दिल्ली में पत्रकार द्वारा सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें ज्यादातर लड़कियों ने भाग लिया। लड़कियों ने अपना परिचय देते हुए अपने बारे में बताया कि हम लड़कियों को हमारे माता पिता ने दो भागों में बांट दिया है। हमारे भाई लोगों को स्कूल में पढ़ाई करने के लिए भेजते हैं उनको स्कूल जाने पर कोई रोकटोक नहीं करते। लेकिन जैसे ही हम लड़कियां स्कूल जाने का नाम लेती हैं तो हमारे माता पिता बोलते हैं कि तुम्हें पढ़ाई लिखाई करने की क्या जरूरत है ? तुम्हें तो एक दिन ससुराल ही जाना है। तुम लड़कियां घरेलू कामकाज सीखो, जो ससुराल में काम आएगा। अगर तुम लड़कियां घरेलू कामकाज नहीं सीखोगी तो हमलोगों को ही ताना सुनना पड़ेगा कि तुम्हारी बेटी को कुछ काम करना नहीं आता है। ससुराल वाले गुस्से में आकर तुम्हारे साथ मारपीट भी करेंगे। इस विषय से लड़कियां बहुत चिंतित हो गई कि आखिर हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है ? लड़कियों का कहना है कि हमारे देश में कितनी सारी लड़कियां आगे बढ़ रही हैं। अपनी ऊर्चाईयों को छू रही हैं। पश्चिम दिल्ली में रहने वाले बुजुर्ग व्यक्ति ने बताया कि हम अपनी बेटियों को पढ़ाई लिखाई करने बाहर नहीं भेजते हैं, क्योंकि



आजकल लड़कियां जितनी भी स्कूल जाती हैं, वह लड़कों के साथ घूमकर गलत संगतों में पड़ जाती हैं, और कुछ ही दिनों के बाद अपने घर से भाग जाती हैं। इसी डर से हमलोग अपनी लड़कियों को बाहर नहीं निकलने देते हैं। 32 वर्षीय (परिवर्तित नाम) श्रीमती सुलेखा देवी जी का कहना है कि हमारी बच्ची अभी 10.12 साल की है, इसलिए थोड़ा बहुत घर से बाहर चली जाती है लेकिन जैसे ही हमारी लड़की 16.17 की होगी हम उन्हें अपने घर से बाहर भी नहीं निकलने देंगे। 11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अंजली ने बताया कि

हां भईया यह सही बोल रही हैं। जब तक हमारी शादी नहीं हो जाती है, तब तक हम घर की चारदिवारी में बंद रहती हैं। इसलिए हम लड़कियां आप सभी लोगों से कहना चाहती हैं कि यह कैसी दुनिया है, जहां बेटियों की पढ़ाई लिखाई करने पर पाबंदी है। लड़के खुलेआम घूम सकते हैं लेकिन हम लड़कियां क्यों नहीं। आखिर हम लड़कियों पर इस तरह का दबाव क्यों ? हम लड़कियां भी दूसरी लड़कियों की तरह पढ़ाई लिखाई तथा आजादी से घूमना चाहती हैं। क्या एक लड़की गलत होने से सारी लड़कियां गलत हो सकती हैं ?

माता पिता ने छीना बचपन

बातूनी रिपोर्टर आरती व रिपोर्टर ज्योति

विजिट के दौरान पत्रकार उस स्थान पर जा पहुंचा जहां छोटे छोटे मासूम बच्चे लोहे का औजार बनाते पाए गए। इन बच्चों की उम्र लगभग 12.13 साल तक है। इतनी छोटी उम्र में यह बच्चे लोहे का औजार कैसे बना लेते हैं। इसी विषय को लेकर पत्रकार ने काफी लोगों से जायजा लिया कि आखिर इन बच्चों की क्या मजबूरी है, जो यह काम करते हैं ? लोगों द्वारा जानकारी मिली कि यह बच्चे अलग अलग स्थान के रहने वाले हैं और इनके माता पिता खुद इनको काम सिखाने के लिए इन लोहार के पास भेजते हैं; क्योंकि इन बच्चों के माता पिता का कहना है कि हमारे बच्चे औजार बनाने का कार्य सीख लेंगे तो भविष्य बन जाएगा। यह बात पत्रकार को समझ नहीं आ रही थी कि लोहे का औजार बनाने से किसी बच्चे का भविष्य कैसे बन सकता है। अगले दिन पत्रकार उसी स्थान पर छानबीन करने के लिए जा पहुंचा, तो पत्रकार ने देखा कि एक मां अपने बच्चे को इसी काम पर लगाने आई थी। पत्रकार ने उस मां से पूछा कि आप अपने बच्चे को इस काम में क्यों लगा रही हो ? उस मां ने बताया कि हमारे गांव में यह नियम है कि जो भी बच्चा 10 साल का होता है उसको काम सीखने के लिए बाहर भेजते हैं। इसलिए मैं अपने बच्चे को यहां छोड़ने आई हूँ। साथ ही साथ माताजी ने यह भी बोला कि हमलोग लोहे का काम इसलिए सिखा रहे हैं कि यह सीखने का कोई पैसे नहीं लगते हैं। दूसरे काम सिखाने में बहुत पैसे खर्च होते हैं। लोहे के औजार बनाने वाले बच्चों से बात की तो पता चला कि इन बच्चों को यह काम करने में बहुत तकलीफ होती है। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) साजन ने बताया कि लोहे कि औजार बनाने के लिए एक भट्टी है। हम बच्चे उस भट्टी में औजार बनाते हैं औजार बनाने का नियम कुछ इस प्रकार है- जैसे हम बच्चे एक हाथ से भट्टी में आग जलाते हैं, ताकि वह लोहा पिघल सके। उसके बाद चिमटे से पकड़कर लोहे को बाहर निकालते हैं, फिर हथौड़ी से उस लोहे को पीटते हैं और मशीन से डिजाइन करते हैं कि हमें कौन सा औजार बनाना है। इसके आगे का काम हमारा मालिक करता है। लेकिन इस काम को करते वक्त हाथों में छाले पड़ जाते हैं और भट्टी के पास ज्यादा देर बैठने पर हमारा शरीर जलने लगता है, व सर में चक्कर आने लगता है, परंतु हमारे माता पिता यह देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं। बस हमारे माता पिता अपनी जिद पर अड़े हैं कि हम सभी बच्चों को यही काम सीखना है।

मालिक के दबाव में मासूम बच्चे करते हैं चादर ओढ़कर ड्रग्स सप्लाई



रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन, बस अड्डा, लालबत्ती व भीड़भाड़ वाले स्थान, सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए नशे का गढ़ बनते जा रहे हैं। आड़े विस्तार से जानते हैं कि किस प्रकार बच्चों को नशीले पदार्थ का व्यापार करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है? विजिट के दौरान पत्रकार ने कुछ ऐसे बच्चों को देखा जो चादर ओढ़ रखे थे। यह देखकर पत्रकार चौंक गया और जानना चाहा कि कड़कती गर्मी में वह बच्चा चादर क्यों ओढ़ रहा है? पत्रकार उस बच्चे के पास जा पहुंचा और उस बच्चे से बात करने की कोशिश की। पास पहुंचते ही बच्चा पत्रकार से बोला छोटा चाहिए या बड़ा? पत्रकार अपने मन

में सोचने लगा कि आखिर ये छोटा या बड़ा क्या है? उसने सोचा कि ऐसा करते हैं इस बच्चे से बोलते हैं कि छोटा चाहिए। इस तरह पत्रकार ने अपने मन की बात उस बच्चे से कह दी कि मुझे छोटा चाहिए। वह बच्चा बोला कि छोटे का प्राइस 150 रूपया है और बड़े का 300 रूपया। पत्रकार ने जब छोटा मांगा तो उस बच्चे ने ओढ़ रखी चादर में से छोटी पुडिया निकाल कर दी, जो कागज में लिपटी हुई थी। इस पुडिया को खोलने के बाद पता चला कि यह तो ड्रग्स है। जैसे ही पत्रकार ने इस बच्चे से पूछा कि यह क्या है? तो यह बच्चा भागने लगा। यह देखकर पत्रकार ने उस बच्चे समझाया कि आप डरो मत मैं आप जैसे बच्चों के लिए ही काम करता हूँ। कुछ देर उस बच्चे के साथ

अपना समय व्यतीत करने के बाद उस बच्चे ने अपने बारे में बताया कि हम बच्चे ड्रग्स सप्लाई अपनी मर्जी से नहीं करते हैं। हमारा एक मालिक है, जो हम बच्चों को पूरी तरह ट्रेनिंग दे रहा है कि किस प्रकार ड्रग्स सप्लाई करना है। हमें बोला जाता है तुम लोग भीड़-भीड़ वाले स्थानों को अपनाओ और जो व्यक्ति तंथा बच्चे नशे के हालत व गंदे कपड़े में दिखे उनके पास ड्रग्स लेकर जाना और उससे जब बोलोगे तो वह खुद खरीद लेगा। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को पुलिस वाले भईया से डर नहीं लगता है? 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजन ने बताया कि हम बच्चों को किसी से डर नहीं लगता है, क्योंकि पुलिस कार्यकर्ताओं को हमारा मालिक हप्ता देते हैं। इसलिए पुलिस देखकर भी अनदेखा कर देती है। जब हम बच्चे रात को दस बजे तक अपने अड्डों पर पहुंचते हैं तो हमारा मालिक हम बच्चों से हिसाब मांगते हैं और मालिक भी ड्रग्स का नशा करते हैं। वह हम बच्चों को भी नशा करने के लिए बोलते हैं। अगर हम बच्चे नशा नहीं करते हैं तो जबरदस्ती नशा कराते हैं। भूतकाल में हम बच्चे ड्रग्स का नशा नहीं करते थे तो हमारे शरीर में कोई तकलीफ नहीं थी लेकिन जब हम बच्चे ड्रग्स का नशा करने लगे हैं तब से छाती व पेट में दर्द होता रहता है। कभी कभी तो नाक से खून भी निकल जाता है। हम बच्चे चाहते हैं कि इस दलदल से हम बच्चों को बाहर निकाला जाए तभी हम बच्चे सुरक्षित रह सकते हैं।



क्या डंडे के बल पर बन सकती है हमारी जिंदगी?

बातूनी रिपोर्टर सागर व रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ बालकनामा के सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया गया। इस दौरान मीटिंग में भाग ले रहे सभी बालकनामियों ने अपना नाम परिचय बताते हुए हो रही परेशानियों के बारे में जिक्र किया। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मुन्ना ने बताया कि वर्तमान में हम सभी बच्चे स्टेशन पर असुरक्षित हैं, क्योंकि आर.पी.एफ. पुलिस वाले लगभग 25 बच्चों को जबरन स्टेशन से उठाकर नशा मुक्ति केंद्र ले जा चुके हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि यह पुलिस वाले ऐसा क्यों कर रहे हैं? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुहेव का कहना है कि यह पुलिस वाले भईया भूतकाल में एक जगह पर छापा मारते थे जिसका नाम गुप्त रखा गया है, क्योंकि उस जगह पर काफी बड़े व्यक्ति नशा करके गलत काम करते थे। इसलिए पुलिस वाले भईया को लगता है कि वह लोग कहीं हम छोटे बच्चे को अपने चंगुल में न फंसा लें। इसलिए स्टेशन से दूर कर रहे हैं। 16

वर्षीय (परिवर्तित नाम) रूपम ने बताया कि भईया हम सभी बच्चे अधिक प्रसन्न है कि पुलिस वाले भईया हमारे भविष्य के बारे में सोच रहे हैं लेकिन दुख इस बात का है कि उनका तौर-तरीका गलत है। अगर उन्हें हम बच्चों को नशा मुक्ति केंद्र ले जाना ही है तो स्नेह से ले जाएं। हम बच्चे खुशी-खुशी जाने के लिए तैयार हैं लेकिन वे आधी रात को आते हैं, डन्डा मारते हैं और गाड़ी में जबरदस्ती उठाकर ले जाते हैं। इस व्यवहार से हम बच्चे सहमत नहीं हैं। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुलेमान का कहना है कि आप सभी जानते हैं कि बच्चे स्टेशन पर असुरक्षित हैं लेकिन हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं? स्टेशन के अलावा और कहीं स्थान भी ऐसा नहीं है जहां हम बच्चे सुरक्षित रह सकते हैं अगर सरकार व आप लोग हम बच्चों को नशे से मुक्त देखना चाहते हैं तो आप सभी से गुजारिश है कि पहले उन दुकानदारों के खिलाफ आवाज उठाएं, जो चोरी चुपके राशन की दुकान से नशा सप्लाई कर रहे हैं।



बिहार के प्राइवेट स्कूल में डर डर के जी रहे हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: विकास व रिपोर्टर: दीपक

पत्रकार ने बिहार में दौरा किया तो पता चला कि एक रेजीडेंसियल प्राइवेट स्कूल है जिसे लोग होस्टल के नाम से जानते हैं। इस प्राइवेट स्कूल में लगभग 500 विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे हैं। वे इसी स्कूल के अंदर रहते हैं। विद्यार्थियों ने बताया कि हमारा स्कूल सिर्फ नाम का प्राइवेट स्कूल है। इस स्कूल में किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं है। इस स्कूल के वातावरण को देखकर लगता है कि यह एक कबाड़खाना है, क्योंकि यहां काफी सारे चूहे हैं, जो हमारे सामान तथा किताबें भी काट देते हैं। जिस जगह पर हमलोग सोते हैं, वहां मिट्टी मिट्टी कर देते हैं। कभी कभी तो हम बच्चों को पैर हाथ में भी काट लेते हैं। इस परेशानी से जूझते हुए हम सभी विद्यार्थियों ने प्रिंसिपल से अपनी परेशानी बताई, लेकिन वह हम पर ही गुस्सा होने लगे और कहने लगे कि रहना है तो रहो नहीं रहना है तो मत रहो। जब हम बच्चे स्कूल छोड़कर बाहर जाने के लिए तैयार होते हैं तो प्रिंसिपल हमारे माता पिता को हमारे बारे में गलत जानकारी देते हैं। इसकी बदौलत हम सभी बच्चों को डांट सुनने को मिलती है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रूपेश का कहना है कि हमारे माता पिता ने बहुत मुश्किल से इस स्कूल में दाखिला दिलाया है ताकि हम बच्चे अपने माता पिता की तरह खेतों में काम ना करें और हम पढ़ाई लिखाई करके अच्छा काम कर सकें, लेकिन स्कूल की हालतों को देखते हुए हम बच्चों को रात को नींद भी नहीं आती है। हम बच्चे चाहते हैं कि इस परेशानी से हम बच्चों को जल्द से जल्द छुटकारा दिलाया जाए।

पीड़ित लड़कियों की पुकार आखिर हमारे साथ ऐसा कब तक?

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन लड़कियों के लिए दिन पर दिन असुरक्षित स्थान बनता जा रहा है। वर्तमान में पता चला कि स्टेशन पर रहने वाली लड़कियों के साथ शोषण हो रहा है। यह बात लगभग दो सप्ताह पहले की है। पत्रकार विजिट के दौरान स्टेशन पर पहुंचे और स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ बातचीत की कि आप बच्चे किस प्रकार स्टेशन पर गुजर बसर कर रहे हो? अभी कोई परेशानी तो नहीं है? 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रानी ने बताया हम सभी लड़कियां स्टेशन पर असुरक्षित महसूस कर रही हैं। जिन मुसीबतों से बचने के लिए हम लड़कियां घर को छोड़कर स्टेशन पर आ जाती हैं उससे भी बढ़कर स्टेशन की परेशानी है। लड़कियों ने विस्तार से बताया कि पहले हमारे साथ लगभग 12 लड़कियां स्टेशन पर थीं जो कबाड़ा बीन कर एक औरत को देती थीं और उसके पास ही रहती थीं। वर्तमान में वह सभी लड़कियां अचानक कहां चली गईं, कुछ पता नहीं चला? फिर हम लड़कियां उस औरत से बात करने के लिए उनके घर पहुंचीं, तो पता चला कि उनके माता पिता आए थे और वह अपनी लड़कियों को ले गए। यह बात सुनकर हम लड़कियां चौंक गईं और उनसे सवाल जवाब किए कि सभी के माता पिता एक ही साथ आए थे क्या? क्योंकि उसके एक दिन पहले उन सभी लड़कियों से हम लड़कियों की मुलाकात हुई थी। वह काफी उदास रहती थीं। उनसे पूछे जाने पर वह खामोश थीं और कबाड़ा बीनते के बाद वह सभी लड़कियां अपने घर निकल लेती थीं।



यही बात चल ही रही थी कि एक 15 वर्षीय बच्ची भागती हुई आई; उससे पूछताछ करने पर, उसने जो बताया जिसे सुनकर आप हैरान हो जाएंगे। उस लड़की से पूछताछ करने पर पता चला कि वह कोठे से भाग कर आ रही है। जब पत्रकार ने उस बच्ची से पूछा कि आपको वहां कौन लेकर गया था तो उसने रोते हुए कहा कि जिस औरत के पास हम लड़कियां रहती थीं, वह हम जैसी न जाने कितनी लड़कियों को उस कोठे पर भेज चुकी है। बच्ची ने बताया कि वह नई लड़कियों को अपने चंगुल में फंसाती है और उसे बहला-फुसला कर अपने घर में रखती है। जब इस औरत के पास कोठे के दलाल का फोन रात को ही आता है, तो उस रात लड़कियों को खाने में नींद कि दवाई मिला देती है जिसकी वजह से हमें कुछ पता नहीं

चलता है, और जब हमारी आंख खुलती हैं तो हम अपने आपको एक बंद कमरे में पाते हैं। वहां कोठे की मालकिन हम लड़कियों को अश्लील काम करने के लिए बोलती है। अगर हम मना करते हैं तो हमारे हाथ पैर रस्सी से बांध कर अश्लील काम करवाती हैं। बच्ची ने रोते हुए कहा कि वहां प्रतिदिन एक लड़की के साथ 5.6 बार दुष्कर्म होता है और दुष्कर्म करने वाले व्यक्ति भी बहुत बुगुर्ज होते हैं। जब हम उनसे बोलते हैं कि आप हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो, हम तो आपकी बेटी की तरह हैं? तो वह बोलते हैं कि ऐसा करने के लिए तो मैंने पैसे दिए हैं। अगर इस दौरान कोई भी लड़की गर्भवती होती है, तो उसे दवाई खिलाकर भ्रूण हत्या करा देती है। लड़कियों का कहना है कि आखिर हमारे साथ ऐसा कब तक होगा? क्या हमें इस दुनिया में सुरक्षित जीने का अधिकार नहीं है?

बच्चों से मिली माता-पिता को सीख

बातूनी रिपोर्टर: खुशी व रिपोर्टर: दीपक

यह सच है कि बड़े बुजुर्ग को देखकर बच्चे भी वही सीखते हैं जैसा बड़े बुजुर्ग व्यवहार में लाते हैं। परिवार के बड़े लोगों द्वारा किये जा रहे अच्छे और बुरे सभी कामों को बच्चे स्वतः सीख लेते हैं। इसके लिए उन्हें कहीं से प्रशिक्षण लेने की जरूरत नहीं होती है। इसीलिए परिवार को बच्चे की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। यहां नीचे इसी तरह की एक जानकारी दी जा रही है, जिसमें बच्चों ने वैसा ही सीखा, जैसा बच्चों ने अपने पिता को करते देखा तथा जैसा पिता ने सिखाया चाहा।

यह जानकारी नोएडा की एक झुग्गी बस्ती की। इस जगह पर तिरपाल से बनी हुई लगभग 600 झुग्गी-झोपड़ियां हैं। यहां रहने वाले सभी लोग शाम के वक्त अपने काम पर से लौटने के बाद जुआं खेलने के लिए बैठते हैं,



आपस में गाली-गलौज भी करते हैं। इन्हें देखकर हम बच्चे भी ऐसा ही करने लगे हैं। पहले सभी बच्चे पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते थे लेकिन अब कोई बच्चा स्कूल जाने का नाम तक नहीं लेता है। सुबह होते ही जुआं खेलने के लिए बैठ जाते हैं। इस जुए की बुरी लत की वजह से बच्चे अपने घर का सामान ही बेचने लगे हैं। घर के सामान बेचने से भी इनका खर्चा पूरा नहीं होता है। इसलिए कुछ बच्चों ने कबाड़ा बीनना शुरू कर दिया है। बच्चों का कहना है

कि हम पहले स्कूल जाते थे तो रात के समय हमारे पिता हमारे साथ जुआं खेलने बैठते थे। जब हम अपने पिता से बोलते थे कि जुआं बच्चों के लिए गंदी चीज है, तो हमारे पिता बोलते थे कि ऐसा कुछ नहीं है। लोगों को जुआं भी खेलना चाहिए। अब हम बच्चों ने खुद से जुआं खेलना शुरू कर दिया है, तो हमारे माता पिता को परेशानी हो रही है। अगर हमारे माता पिता उस वक्त ही हमें इस लत में नहीं फंसाते तो शायद आज हम बच्चे जुए की लत में नहीं पड़ते। हम बच्चे भी अपने पिता की तरह आपस में गाली-गलौज करने लगे हैं। माता पिता का कहना है कि हमें क्या पता था कि यह जुआं खेलना इतना महंगा पड़ सकता है। अब हम सभी चाहते हैं कि कैसे भी करके हमारे बच्चे इस जुए की अंधेरी दुनिया से बाहर निकल जाएं, तभी हमारे बच्चों का भविष्य उज्वल होगा।

मलवा बना बच्चों की मौत का अड़ा

बातूनी रिपोर्टर: वर्षा व रिपोर्टर: चेतन

पश्चिमी दिल्ली जहां कई ऐसी फैक्टरियां हैं जिनमें लोहे की कटाई-छंटाई तथा लकड़ियों का फर्नीचर बनाया जाता है। इन फैक्टरियों का सारा मलवा चूना भट्टी के एक स्थान जिसको लोग वीराना के नाम से जानते हैं। इसी वीराना में आस पास की फैक्टरियों का मलवा ट्रक द्वारा गिराया जाता है। इसी वजह से चूना भट्टी में रहने वाले कुछ माता-पिता तथा बच्चे उस वीराना में मलवा छंटाई बिनाई करने के लिए जाते हैं। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कहेया ने बताया कि हम सभी बच्चे काफी देर तक मलवे के ट्रक का इंतजार करते हैं और जैसे ही ट्रक आता है, जैसे ही हम सभी बच्चे उस ट्रक की ओर दौड़ते हैं ताकि उस ट्रक में से जो लोहा निकलता है, वह हमें मिल जाए। कभी कभी तो हम बच्चों में लड़ाई झगड़ा भी हो जाता है। यहां लगभग 15.20 बच्चे ऐसे हैं जो रोज मलवा छंटने के लिए आते हैं और ट्रक मलवा लेकर एक दिन में दो-तीन बार ही आता है। हम बच्चों को भरपूर लोहा नहीं मिल पाता है और जब हम बच्चे खाली घर लौटते हैं, तो इसका परिणाम बहुत बुरा होता है; क्योंकि हमारे माता-पिता हम बच्चों को बहुत मारते हैं और खाना पीना भी नहीं देते हैं। हर वक्त गाली-गलौज से बात करते हैं। उन्हें लगता है कि हम मलवा छंटने के लिए नहीं गए थे। हमारे माता-पिता ऐसा



कहते हैं कि कहीं तुम अपने दोस्तों के साथ खेल तो नहीं रहे थे। 11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोनू ने बताया कि यह तो घर की समस्या है। जब हम मलवा छंटने के लिए जाते हैं और चलते हुए ट्रक की ओर दौड़ते हैं तो ट्रक ड्राइवर भी गुस्सा होता है। वह बोलते हैं जब ट्रक रूक जाए तब तुम लोग मलवा छंटना। लेकिन हम सभी अधिक लोहे की लालच में दौड़ पड़ते हैं। दो महीने पहले ऐसे ही एक 10 वर्षीय बच्चा ट्रक की ओर दौड़ा जैसे ही ट्रक मलवा गिरा रहा था वह बच्चा उस मलवे में से लोहा निकालने के लिए झपटा। वह मलवे के नीचे आ गया, जिसकी वजह से उस बच्चे की आंख, नाक व मुंह में मलवा चला गया। उस बच्चे को अस्पताल ले जाया गया, दो सप्ताह के बाद वह बच्चा पूरी तरह से ठीक हुआ। इतना ही नहीं मलवा छंटने वक्त काफी धूल मिट्टी उड़ती है जिसकी वजह से हम बच्चों को छाती व नाक में बहुत तेज दर्द होता है। अक्सर हम बच्चे बीमार पड़ते रहते हैं।

आखिर कब मिलेगी इन रीत-रिवाजों से आजादी ?

बातूनी रिपोर्टर व रिपोर्टर चेतन

क्षेत्र विजिट करते हुए बालकनामा के पत्रकार की मुलाकात कुछ ऐसे परिवारों से हुई जो अपने परिवार को खुद के छोटे-मोटे कामों को करके पाल रहे हैं। मध्य प्रदेश से आए हुए कुछ परिवार जो पश्चिम दिल्ली में रह रहे हैं। यह अपना पालन पोषण करने के लिए बांस की डलियां बनाते हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी मिली कि यह लोग बांसखेड़ी जाति के हैं। इनका काम बांस से संबंधित होता है। इनके परिवारों में देखा गया है कि अधिक संख्या में बच्चे काम कर रहे हैं जैसे बांस काटना व छोटे-छोटे टुकड़ों को इकट्ठा करना। छोटी-छोटी डलियां बनाना। ये डलियां तीस से चालीस रुपए में बेचेते हैं। इन बच्चों के हुनर को देखकर पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुरभी ने अपने बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हम लोग भूतकाल में अपने गांव मध्य प्रदेश में रहते थे, वहीं खेतीबाड़ी तथा बांस काटने का काम करते थे लेकिन कुछ लोगों ने हमारे माता-पिता को बताया कि दिल्ली जैसे शहर में यह काम बहुत तेजी से चलते



हैं। अगर तुम दिल्ली में चार डलिया बेचोगे तो पांच सौ रुपए तक कमा लोगे। इस लालच के शिकार हमारे माता-पिता दिल्ली में आकर रहने लगे। वर्तमान में हम बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है; क्योंकि गांव में तो बांस के अपने पौधे थे, जहां से बांस काटकर ले आते थे। यहां तो बांस ही बहुत महंगा है। 12 किलोमीटर दूर से बांस लाना पड़ता है। इस स्थिति को देखकर हमने अपने माता-पिता को समझाया कि वापस गांव चलते हैं। लेकिन हमारे माता-पिता गांव जाने के लिए तैयार

नहीं हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा आप लोग पढ़ाई करने जाते हो ? 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सौरभ ने कहा कि भईया हम सभी बच्चे पढ़ाई-लिखाई करने स्कूल जाते हैं लेकिन स्कूल से आते ही हमारे माता पिता बांस की मरम्मत करने में लगा देते हैं जिसकी वजह से हम बच्चे सही से पढ़ाई लिखाई नहीं कर पा रहे हैं। स्कूल से मिला होमवर्क भी नहीं कर पाते हैं, तो अध्यापक क्रोधित होते हैं। इन सभी बातों को जानकर भी हमारे माता-पिता अनदेखा कर रहे हैं।

बेटी बनी मित्र की बुरी नजर का शिकार

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर दो मित्रों की है। एक मित्र अमीर है और दूसरा गरीब। इन दोनों में बहुत गहरी मित्रता है। एक मित्र, जो अमीर है उसने कबाड़े की दुकान खोल रखी है और दूसरा, जो गरीब है वह अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए रिक्शा चलाता है। यह दोनों मित्र आपस में शाम को ही मिलते हैं। गरीब वाले मित्र के घर दोनों मौज मस्ती में नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं। दुख की बात यह है कि अमीर वाला जो मित्र है, उनका कोई परिवार नहीं है, वह अकेला ही रहता है। लेकिन जो गरीब वाला परिवार है जिसमें कुल 6 सदस्य हैं चार बच्चे व माता-



पिता। हाल ही में पता चला कि अमीर वाले मित्र का नेचर कुछ ठीक नहीं है। गरीब वाले मित्र की एक 11 वर्षीय बेटी है। वह छठी कक्षा में पढ़ती है। जब यह बच्ची अपने स्कूल के लिए बाहर निकलती है तो यह अमीर वाला मित्र इस बच्ची के साथ अश्लील बातें बोलता है व स्कूल आते-जाते समय हाथ भी पकड़ लेता है। यह देखकर इस बच्ची ने इसके खिलाफ आवाज उठाई। लेकिन इस बच्ची के पिता इसे ही मारने लगे और बोले कि मेरा जान से भी ज्यादा प्यारा मित्र ऐसी हरकत नहीं कर सकता है। तुम यह धिनीना इल्जाम मेरे मित्र पर क्यों लगा रही हो ? धीरे-धीरे समय बीतता गया और लगभग 7.8 माह गुजर गए, फिर एक दिन दोनों मित्र गरीब मित्र के घर पर मिले। अमीर वाला मित्र खुशी के मौके बहाने बोलकर गरीब वाले मित्र को बहुत ज्यादा शराब पिला दी, जिसके कारण वह बेहोश हो गया। इतने में 11 वर्षीय की बच्ची जो अपने घर का काम कर रही थी, उसे अकेला देखकर इस मित्र ने गलत करने की कोशिश की, तब तक इस बच्ची की मां बाहर से आ गई। अपनी बेटी के साथ गलत होते देखकर बच्ची की मां ने उस अमीर मित्र को डंडे से मारा। सुबह बच्ची का पिता जब होश में आया तो मां ने सारी बात पिता को बताई। लेकिन पिता ने इस बात का यकीन ही नहीं माना कि मेरा मित्र ऐसी धिनीनी हरकत कर सकता है। इस बात को लेकर मां-बेटी दोनों चिंतित रहती हैं कि कहीं कुछ गलत न हो जाए। वर्तमान में जब यह बच्ची स्कूल के लिए निकलती है तो माता भी साथ जाती है। इस बच्ची के साथ हर पल मां रहती है, ताकि यह बच्ची सुरक्षित रहे।

बदबू से परेशान बस्ती-वासी और मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर: संजना व रिपोर्टर: पूनम

आगरा की एक बस्ती जो गंदगी से अटी पड़ी है। चारों ओर फैली गंदगी और सड़े कचरे से निकलने वाली बदबू की वजह से उस बस्ती में रहना बहुत मुश्किल हो गया है। बदबू की वजह से यहां बच्चों का रहना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। वे जल्दी-जल्दी बीमार हो जाते हैं तथा उन्हें अक्सर उल्टी की शिकायत रहती है, इस कारण बच्चों का मानसिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

बस्ती के निवासियों को हो रही परेशानी का जायजा लेने के लिए बालकनामा की पत्रकार टीम खुद यहां जा पहुंची। बदबू की वजह से पत्रकारों को भी सांस लेने में काफी तकलीफ हो रही थी। पत्रकारों ने जानना चाहा कि यह किस चीज की बदबू है ? आस-पास छानबीन करने पर भी लोगों ने कुछ नहीं बताया; क्योंकि इन लोगों को लग रहा था कि कहीं हमारे खिलाफ पुलिस थाने में शिकायत दर्ज ना करा दें। दो-तीन दिन लगातार छानबीन करने पर पत्रकार टीम की मुलाकात 32 वर्षीय महिला (परिवर्तित नाम) श्रीमती सीता देवी से हुई। वह अपने बच्चे के साथ अस्पताल से लौट रही थीं।



यह महिला भी पत्रकार से बात करने में डर रही थी। पत्रकारों ने उस महिला को कहा कि आप डरो मत, हम बच्चों के लिए काम करती हैं। जो बच्चे मुसीबत में होते हैं, मैं उनकी मदद करती हूँ।

काफी समझाने के बाद उस महिला ने बताया कि इस जगह पर रह रहे कुछ परिवार शंख की सफाई का काम करते हैं। यह आने वाली बदबू उसी शंख के कचरे की है। पत्रकार ने जानना चाहा कि आखिर

शंख में से बदबू क्यों आती है ? इनका क्या उपयोग है ? उसने बताया कि इन लोगों से कुछ व्यक्ति समुद्री किनारों से गंदे शंख लाते हैं। यह लोग अपने बच्चों के साथ गंदे शंखों की सफाई करते हैं। सफाई करने पर निकले गंधे कचरे को बस्ती के पास ही गड्ढे में फेंक दिया जाता है। यह कचरा जब सड़ जाता है तो इसमें से बुरी बदबू निकलती है। सफाई करने के बाद इन शंखों को बिक्री के लिए शहर भेजा जाता है। इन शंखों का उपयोग

पूजा सामग्री के तौर पर किया जाता है। पूजा के लिए इन्हें बड़ा ही शुभ माना जाता है।

इस काम से यह लोग पांच से छः हजार रुपये प्रतिमाह कमा लेते हैं। इस काम में इनके बच्चे भी लगे हैं। उन्हें भी शंख की सफाई करने में बहुत परेशानी होती है। 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कोमल ने बताया कि हम बच्चे इस परेशानी से बचने के लिए अपनी नाक पर कपड़ा बांधकर रखते हैं, फिर भी इस परेशानी से छुटकारा नहीं मिलता है। डर और मजबूरी में हमें यह काम करना पड़ता है। यदि हम अपने माता-पिता का कहना नहीं मानेंगे तो वे हमें डटिंगे और मारेंगे; और यदि हम लोग काम में उनका साथ नहीं देंगे तो हमारे घर का गुजारा कैसे होगा ? हम लोग बेहद गरीब हैं।

आप पत्रकार हमारे बीच आये, यह हमारे लिए बेहद खुशी की बात है। आपके यहां आने से हमें उम्मीद की किरण दिख रही है। आप लोग हमारी बदहाल जिंदगी की जानकारी समाज और शासन-सत्ता तक अवश्य पहुंचाएंगे। हम बच्चे भी साफ जगह में रह कर पढ़ाई करके अपना जीवन सुखमय बनाना चाहते हैं। साथ ही अपने माता-पिता को भी इस बदहाल जिंदगी से निकालना चाहते हैं।

दुर्व्यवहार से ग्रस्त माता-पिता ने बेटी को रोका काम से

बातूनी रिपोर्टर: मधु रिपोर्टर: ज्योति

राजस्थान में अति गरीबी होने के कारण कुछ परिवार दिल्ली में आकर अपनी गुजर-बसर कर रहे हैं। रोजगार के अवसरों की कमी तथा गुजारे लायक परिवार की आय नहीं होने की वजह से पुल के नीचे अपनी जिंदगी गुजारने को मजबूर हैं। बातचीत करने पर पत्रकार को जानकारी मिली कि इनके परिवार में सभी लोग अपना पेट भरने के लिए लालबत्ती पर फूल बेचने का काम करते हैं। इस काम में लड़कियां भी शामिल हैं। इनके माता-पिता मंडी से गुलाब के फूल लाते हैं। माता-पिता उन फूलों का गुलदस्ता तैयार करते हैं। लड़कियां पुल के नीचे खड़ी रहती हैं, जैसे ही लालबत्ती होती है और सभी गाड़ियां रुकती हैं, गाड़ियों के पास जाकर गुलदस्ता बेचना शुरू कर देती हैं। लेकिन कुछ दिनों से यह लड़कियां अपने काम को नजरंदाज कर रही हैं। इन्होंने गुलदस्ते बेचना बंद कर दिया है। इनके माता-पिता भी इनके इस निर्णय से सहमत हैं। उनका कहना है कि हमारी बेटियां गुलदस्ता नहीं बेचेंगी। आखिर ऐसा क्या राज है, जो इनके माता-पिता पत्रकार को भी बताने से कतरा रहे हैं? आइए



विस्तार से जानने कि कोशिश करते हैं। पत्रकार ने लड़कियों से सच जानने की कोशिश की। लेकिन वह भी नहीं बता रही थीं। पत्रकार ने लड़कियों से बोला अगर तुम यूं ही अपनी परेशानी छुपाती रहोगी और किसी को नहीं बताओगी, तो इसका समाधान कैसे निकलेगा? काफी देर तक लड़कियों समझाने पर पता चला कि इन लड़कियों को आने-जाने वाले ड्राइवर परेशान करते हैं। जब हम लड़कियां गाड़ियों के पास जाकर उनको गुलदस्ता खरीदने की गुजारिश करते हैं, तो वह हम लड़कियों से अश्लील शब्द बोलते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम)

मुन्नी का कहना है कि जब हम उन्हें गुलदस्ता देते हैं, तो वह व्यक्ति हमारा हाथ पकड़ लेते हैं और बोलते हैं कि जितना इस गुलदस्ते का मूल्य है इससे भी अधिक पैसा दूंगा। लेकिन मेरे साथ एक घंटे के लिए जाना पड़ेगा। यह बात हमने अपने माता-पिता को बताई। जब हमारे माता-पिता को हमारी बातों पर विश्वास हुआ, तो वर्तमान में हम लड़कियां गुलदस्ता बेचने के लिए नहीं जाती हैं। अब गुलदस्ता बेचने का काम हमारे भाई और माता-पिता कर रहे हैं।

हम लड़कियां चाहती हैं कि इस तरह का दुर्व्यवहार जो हमारे साथ हो रहा है वह न हो। हमारे माता-पिता भी बुजुर्ग हो रहे हैं, हम लड़कियां भी उनका सहयोग करना चाहती हैं। आखिर वह कब तक काम करेंगे? हमें भी समाज में सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार है। “बालकनामा” के माध्यम से ऐसा व्यवहार करने वालों से हम लड़कियों की गुजारिश है कि वे अपना व्यवहार बदलें, ताकि समाज की अन्य लड़कियों की तरह ही हम भी निडरता के साथ अपना जीवन जी सकें। पत्रकार दीदी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, जो आपने हमारी परेशानी जानी-समझी।

संपादकीय

प्रिय साथियों,
नमस्कार !

देश में स्ट्रीट चिल्ड्रन की बढ़ती हुई संख्या देश के सम्मुख एक गहरी चिंता का विषय बनी हुई है। यदि समय रहते इसको नियंत्रण में नहीं लाया गया तब इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत भयावह हो सकते हैं। इसी भयावहता के मद्देनजर भारतीय राष्ट्रीय नीति ने बच्चों को देश की “सर्वोच्च महत्वपूर्ण संपत्ति” के रूप में घोषित किया है। इसमें कहा गया है कि बच्चों को मानव संसाधनों के विकास के लिए राष्ट्रीय योजनाओं में प्रमुख जगह मिलनी चाहिए, ताकि बच्चे मजबूत और जिम्मेदार नागरिक बन सकें तथा शारीरिक और मानसिक रूप से फिट हों। लेकिन अफसोस कि भारत में बाल मजदूरी, किशोर हिंसा, सड़क पर काम करने वाले, निराश्रित शरणार्थी, घरेलू हिंसा और दुरुपयोग के शिकार, यौन शोषण व नशे के शिकार बच्चों के रूप में एक बहुत बड़ा हिस्सा बेहद मुश्किल परिस्थितियों में जीवन जीने के लिए मजबूर है। स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं को आम और खास तक पहुंचाने तथा उन पर अमल कराने की दृष्टि से स्ट्रीट चिल्ड्रन द्वारा संग्रहित खबरों से सजा हुआ बालकनामा का 68वां अंक इस दृष्टि से आपके हाथ में है कि हमारे प्रयास सार्थक हों और स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं का उन्मूलन हो। राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार की व्यवस्था जन्म ले जिससे पुनः किसी बालक को अपना बचपन नहीं खोना पड़े। ये सभी बच्चे वास्तविक रूप में प्रगति कर सकें तथा अच्छी शिक्षा ग्रहण कर देश को गौरवान्वित करें। सुझाव और प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा में !

संपादकीय टीम

इन लड़कियों की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर साक्षी व रिपोर्टर चेतन

लगभग 12 लड़कियां, जो रोज सुबह सूर्य उदय होने से पहले अलग-अलग स्थानों पर समूह बनाकर कबाड़ा बीनने जाती हैं। यह सभी लड़कियां कबाड़ा बीनने के बावजूद भी स्कूल में पढ़ने जाती हैं। इनमें से कुछ लड़कियां चैथी, पांचवीं तथा छठी कक्षा की छात्रा हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) साक्षी का कहना है कि जब सुबह कबाड़ा बीनने जाते हैं, तो काफी अंधेरा होता है। इसलिए हम सभी लड़कियां एक साथ निकलती हैं, ताकि अगर कोई परेशानी भी आए तो हम खुद निपट सकें। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सीमला का कहना है कि हम अपने घर से निकलते वक्त सभी छोटी-मोटी फैक्ट्रियों से होकर गुजरते हैं, क्योंकि फैक्ट्रियों के कार्यकर्ता फैक्ट्रियों में से निकलने वाला कूड़ा कचरा बाहर ही फेंक देते हैं। हम लड़कियां फैक्ट्रियों के बाहर जल रही टयूब-लाईट के सहयोग से कचरा चुनते हैं। इसके बाद हम रेलवे स्टेशन की ओर जाते हैं। जहां हम रहते हैं वहां आस-पास दो छोटे रेलवे स्टेशन हैं। इन स्टेशन पर बहुत कम रेलगाड़ियां रुकती हैं। रेलवे लाइन के आस पास हमें कुछ बोटलें तथा गत्ते मिल जाते हैं। इस रेलवे स्टेशन पर एक पार्सल बना हुआ है। यहां बड़े-बड़े टुक तथा गाड़ियों में सामान को उतारा-चढ़ाया जाता है, तो खराब गत्ते तथा पानी के बोटलें कार्यकर्ता इस रेलवे लाइन की ओर फेंकते हैं। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अंजु ने बताया कि हमारे समूह में एकता है। हम एक साथ तो रहते ही हैं, दूसरी बात यह है कि हम सभी को जितना भी कबाड़ा मिलता है, उसे आपस में आधा-आधा बांट लेते हैं फिर अपने घर निकलते हैं, ताकि हमारा घर का खर्चा अच्छे से निकल सके। घर पहुंचने के बाद हम सभी लड़कियां स्कूल के लिए तैयार होती हैं। जब तक हमारी मां हमारे लिए टिफिन तैयार कर देती हैं। स्कूल से आने के बाद हम लड़कियां दो घंटे विश्राम करती हैं। इसके बाद इसी कबाड़े की छंट्टाई के काम में लिप्त हो जाती हैं। छंट्टाई करने के बाद हम लड़कियां स्कूल से दिया हुआ होमवर्क पूरा करती हैं। इसके बाद भी हम अपनी मम्मी के साथ घरेलू कार्य में मदद भी करती हैं।

नाला बना माता-पिता के लिए चिंता

बातूनी रिपोर्टर रोहित व रिपोर्टर शम्भू

आवास बनाने के लिए जिन मजदूरों को गांव कस्बे से लाया जाता है, इनको रहने के लिए घर तो नहीं दिया जाता, बल्कि इनको रहन-सहन के लिए जिस जगह पर निवास बनाने का कार्य चल रहा होता है वहीं इर्द-गिर्द सिर्फ जमीन दे देते हैं और यह मजदूर उस जमीन पर झुग्गी बनाकर अपने परिवार के साथ रहते हैं। ऐसे ही एक खबर है हयात होटल के पास की। वहां इसी प्रकार के कुछ मजदूर रह रहे हैं। उस जगह की एक तरफ झुग्गी हैं, दूसरी तरफ सड़क। इन झुग्गी और सड़क के बीचों-बीच एक बहुत बड़ा नाला है जो काफी गहरा है। इस नाले के ऊपर सड़क की लाईट वाले खंभों से पुल बनाया गया है, ताकि इन झुग्गी में रहने वाले व्यक्ति आ-जा सकें। इन परिवारों के साथ इनके छोटे-छोटे बच्चे भी रहते हैं, जिन्हें यह लोग अपने बुजुर्ग व्यक्ति के भरोसे पर छोड़कर जाते हैं। यह बुजुर्ग पूरे दिन घर बैठे रहने की वजह से इनको नौद आने लगती है। इसी लापरवाही की वजह से बच्चे इस नाले का शिकार हो रहे हैं।

35 वर्षीय श्रीमती सबिता जी का कहना है कि हमारे मालिक हमें रहने के



लिए सुरक्षित स्थान नहीं देते हैं। जब हमारा मालिक हमें सुरक्षित स्थान दे देगा तब हम लोग भी निडर होकर अपने काम कर सकेंगे। जब भी हम नए स्थान पर जाते हैं, हमें इसी प्रकार की खतरनाक अवस्था में रहना पड़ता है। हम कर भी क्या सकते हैं? अगर हम काम नहीं करेंगे, तो हमारे बच्चे कैसे पलेंगे।

38 वर्षीय श्रीमती मेनका देवी जी ने बताया कि जब कभी बारिश होती है, तो यह पुल गीला हो जाता है। इस पर चलने में हमलोगों का पैर फिसलता है, जिसकी वजह से बच्चे तो बच्चे हम भी इस नाले में गिर जाते हैं। इस समस्या को लेकर हम सभी लोग अपने मालिक के पास पहुंचे। उन्होंने बोला कि मैं कुछ नहीं कर सकता। इसके अलावा और कोई स्थान नहीं है जहां तुम लोग रह सकते हो? हमसे कहा गया कि जिनको इस जगह पर ज्यादा तकलीफ हो रही है वे काम छोड़ कर जा सकते हैं। इस कारण हम लोग इस समस्या को अनदेखा कर दिए और इसी स्थान पर डर-डर कर रह रहे हैं। हम लोगों को हर वक्त डर लगा रहता है कि हमारे बच्चे कहीं इस नाले का शिकार न हो जाएं।

क्या आप खुलवाएंगे सड़क एवं कामकाजी बच्चों का बैंक अकाउंट

बातूनी रिपोर्टर: सलमान व रिपोर्टर: शम्भू

रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चे बहुत ही कठिनाई से दो पैसा कमाते हैं ताकि उनका गुजारा हो सके। यह बच्चे अपने पेट के लिए कबाड़ा बीनते हैं, लोगों के आगे हाथ फैलाकर भीख मांगते हैं, रेलगाड़ियों में अपने वस्त्र उतार कर झाड़ू लगाते हैं, तब जाकर इन बच्चों को दो पैसा नसीब होता है। इसी दो पैसे से यह अपना खानपान करते हैं। बच्चों ने अपने बारे में बताया कि कहा कि भईया हम इतनी परेशानियों का सामना करते हुए दो पैसे कमाते हैं और इन्हीं पैसे में से बचाकर जोड़ लेते हैं लेकिन हमारे जुड़े हुए पैसे अगले दिन चोरी हो जाते हैं। जब हम रात को स्टेशन पर सोते हैं, तब हम नौद में होते हैं, तो बड़ा व्यक्ति हम बच्चों की जेब से पैसे निकालकर ले जाता है। स्टेशन पर बहुत सारे छोटे बच्चे हैं, जो हमारी तरह कबाड़ा बीनते हैं। अगर वह रात को स्टेशन के किसी भी स्थान पर अकेला घूमता हुआ नजर आता है, तो उस बच्चे के भी बड़े व्यक्ति पैसे छीन लेते हैं। कभी-कभी तो जान से मारने की धमकी भी देते हैं। इसलिए हम जिन लोगों



को अच्छी तरह से जानते हैं, उन लोगों को हम अपना विश्वासी मानते हैं। उनके पास ही हम अपने पैसे जमा करवाते हैं। लेकिन वह भी हमारे साथ बेईमानी करते हैं। उन्हें हम बच्चे दो सौ रुपए रखने के लिए देते हैं, तो वह बोलते हैं कि तुमने 150 रुपए ही दिए थे। अगर हम बच्चे ज्यादा कुछ बोलते हैं, तो वही पैसा हमारे सामने फेंक देते हैं, और बोलते हैं कि कल से हमारे पास पैसे जमा नहीं करना। वह भी हमें मारने की धमकी देते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि सरकार या कोई भईया, दीदी हम बच्चों की मदद करे और बैंक अकाउंट खुलवा दे, ताकि हम अपने पैसे को सुरक्षित रख सकें और आने वाले भविष्य में इन पैसे को सही कामों में इस्तेमाल कर सकें।

दादी की नफरत के शिकार हुए मासूम बच्चे: छूटा पिता का साथ

बातूनी रिपोर्टर: सुनील व रिपोर्टर: चेतन

यह खबर गुजरात पाली में रहने वाले एक परिवार की है। इस परिवार में कुल पांच सदस्य रहते थे। दादी, माता, पिता तथा दो बच्चे। इस परिवार के माता-पिता अपने घरेलू काम में व्यस्त रहते थे, बच्चे अपनी पढ़ाई-लिखाई करने के बाद अपने मित्रों के साथ खेलने चले जाते थे। परिवार में दो बच्चों का जिन्न जो ऊपर किया गया है, उनमें से एक 11 वर्षीय लड़की है, व दूसरा 15 वर्षीय लड़का। इन बच्चों के माता-पिता इनसे बहुत प्यार करते थे। इनके पिता स्कूल खुद छोड़ने जाते थे। दादी इन दोनों बच्चों से नफरत करती थीं। न जाने क्यों? यह बात पत्रकार को भी नहीं पता चल पाया।

11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) ज्योति

ने बताया कि सन् 2016 में हमारी दादी जी ने पापा को हमारे लिखाफ भड़काया कि तुम्हारी पत्नी फेरी पर नहीं जाती है। इसलिए हमारा घर नहीं चल पा रहा है। यह बात सुनने के बाद हमारे पापा ने हमारी मम्मी को मारा और कहा कि ले जा अपने बच्चों को और गुस्से में आकर हमें घर से बाहर निकाल दिया, और बोला कि तुम लोग कभी लौट कर इस घर में मत आना। हमारी मम्मी ने पापा को समझाने की पूरी कोशिश की कि उन्हें फेरी का काम पसंद नहीं है लेकिन पापा हमारी मम्मी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे। इसकी बदौलत हमें उसी रात अपनी नानी जी के घर आना पड़ा। हमारी मम्मी ने अपने माता-पिता से सारी बात बताई। अगले ही दिन नानी जी मेरे पापा से बात करने पहुंचीं, तो पापा नानीजी से ही गुस्से से बात करने लगे और

उन्हें धक्का मारकर घर से बाहर निकाल दिया। यह देखकर मम्मी ने निर्णय लिया कि अब हम वापस गुजरात पाली नहीं जाएंगे, नानी जी के पास ही कोई बिजनेस करेंगे। वर्तमान में यह लोग अपनी नानीजी के घर में रहते हैं और घर का खर्चा चलाने के लिए 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुनील बर्तन की फेरी लगाता है। घर-घर जाकर पुराने कपड़ों के बदले स्टील व प्लास्टिक के नये बर्तन देते हैं। जैसे कटोरी, थाली, टिफिन, बाल्टी, टोकरी आदि। इन कपड़ों को इकट्ठा करने के बाद साफ सफाई करते हैं, उसके बाद रविवार को सेल करने बाजार जाते हैं। साथ में इनकी माता भी रहती हैं। सुनील का कहना है कि हम चाहते हैं कि हमारा परिवार जैसे भूतकाल में रहता था, वैसे ही फिर से एक साथ रहने लगे। हमें भी पिता की कमी खलती है। दादी का प्यार चाहिए।

राजू कैसे करेगा अपने परिवार का खर्चा पूरा ?

बातूनी रिपोर्टर: राजू व रिपोर्टर: शम्भू

10 वर्षीय राजू भूतकाल में अपने परिवार के साथ समस्तीपुर में रहता था। गरीबी और बेरोजगारी की वजह से राजू अपने परिवार के साथ दिल्ली आ गया और सराय काले खां में किराए पर मकान लेकर रहने लगा। 6 महीने से दिल्ली में राजू अपने परिवार के साथ हंसी खुशी से रह रहा था लेकिन 6 महीने गुजरने के बाद राजू के दादाजी के साथ दुर्घटना हो गई जिसकी वजह से इसके पापा को गांव जाना पड़ा। वर्तमान में घर का खर्चा चलाने के लिए घर में कोई भी बड़ा व्यक्ति नहीं है, बच्चों में राजू ही बड़ा है, और दो भाई और एक बहन छोटे हैं। राजू ने बताया कि उसके पापा रिक्षा चलाने का काम करते थे, एक माह पहले वह गांव वापस चले गये। दादा जी की हालत ठीक नहीं चल रही है। उनकी देख-रेख करने की वजह से पापा वापस नहीं आ पा रहे हैं। वहां भी घर की हालत ऐसी नहीं है कि



वे हम लोगों के गुजारे लायक पैसे भेज सकें। परेशान न रहे राजू ने बारापुला पर दूसरे लोगों को छोटी-मोटी दुकानें लगाते देखा। यह देखकर राजू ने निर्णय लिया कि मैं भी इनकी तरह मेहनत करूंगा और अपने परिवार का खर्चा निकालूंगा। राजू ने अपनी मम्मी के साथ बारापुला के पास मछली बेचनी शुरू कर दी। राजू की मम्मी रोज मंडी से मछली

लाती हैं, उसके बाद उस मछली को पूरे दिन बर्फ में रखती हैं। शाम होते ही राजू बाजार में ले जाकर मछली बेचता है।

अभी राजू ने पटरी पर मछली बेचने की शुरूआत ही की थी कि एक दिन उस बाजार में दुकान लगाने पर सभी व्यक्तियों से हफ्ता मांगने वाला व्यक्ति आया। उसने राजू से भी हफ्ता मांगा। राजू ने अपने घर की स्थिति बताते हुए कहा कि मैं आपको हफ्ता नहीं दे सकता, आज तो मेरी मछली भी नहीं बिकी है। तो उस दुष्ट व्यक्ति ने राजू की सारी मछली सड़क पर फेंक दी और राजू की मम्मी से गाली-गलौज करने लगा। उसके अलगे दिन से राजू ने अपने मम्मी को कोठी में काम करने के लिए भेजने लगा है और वह अकेले खुद शाम को मछली बेचता है। मुश्किल से पेट भरने लायक पैसे बचा पाता है। कभी-कभार तो मछली भी नहीं बिक पाती है, और उस पर भी हफ्ता उगाही वालों का आतंक ऐसे में सवाल उठता है कि राजू अपने परिवार का गुजारा कैसे करेगा ?



जिंदगी ने बदली करवट

बातूनी रिपोर्टर: सुरेश व रिपोर्टर: शम्भू

बेरोजगारी तथा सत्ता-प्रशासन की लापरवाही की वजह से बंगाल की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अति गरीबी का शिकार था। रहने की बात तो छोड़िये पहनने को कपड़ा और भरपेट चावल मिलना भी नसीब नहीं हो पा रहा था। बच्चों से लेकर बड़े तक सब काम की तालश में निकलते और जिसको जो काम भी मिल जाता, कर लेते। कभी-कभी कुछ परिवारों को कोई काम नहीं मिल पाता था तो उन्हें भूखे ही रात गुजारनी पड़ती थी।

यह बात सन् 2000 की है। बंगाल में अति गरीबी होने के कारण लोग अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए दर-दर भटक रहे थे लेकिन इन लोगों को ऐसा कोई जरिया नहीं मिला जिससे यह लोग अपने घर का गुजारा कर सकें। एक व्यक्ति जो राजधानी दिल्ली में काफी लोगों से कूड़ा-कबाड़ा घर से उठवाने का काम करवाता है, जो बंगाल का ही रहने वाला है। यह व्यक्ति चार-पांच साल में एक बार अपने गांव जाता था। बंगाल के लोगों की गरीबी देखकर इसकी आंखों में आंसू आ गए। लोगों ने इसको अपनी समस्या बताई। इसके बाद ही कबाड़े का मालिक अपने गांव वालों को दिल्ली लेकर आ गया। वर्तमान में सभी लोग बरौली में रह रहे हैं और अपना पालन-पोषण करने के लिए कबाड़े के मालिक के पास काम पर लग गए। अभी कुछ लड़के और लड़कियां अपने माता-पिता के साथ बड़े-बड़े घरों में कूड़ा-कबाड़ा उठाने के लिए जाती हैं। कुछ मजदूरी का कार्य करते हैं, जो लड़के और लड़कियां अपने माता-

पिता के साथ घरों से कूड़ा उठाने के लिए जाती हैं, वह अपने साथ एक रिक्षा ले जाती हैं। उस रिक्षा में घरों का कूड़ा उठाकर और रिक्षा में लाद कर बरौली लाते हैं, फिर उसके बाद छंटाई-बिनाई करते हैं। जैसे कि रोटी एक तरफ, प्लास्टिक का सामान, कागज व कूड़ा-कचरा एक तरफ रखती हैं। इसके बाद इनको चार से पांच दिनों तक इकट्ठा करने के बाद जब काफी सारा इकट्ठा हो जाता है, तो एक बाहर से ट्रक आता है उसमें सारा कबाड़ा लोड करते हैं। लड़कियों और माता-पिता ने बताया कि हम सभी लोगों को काफी मेहनत करनी पड़ती है। हम घर से जो कूड़ा उठाते हैं, वह बहुत भारी होता है। जिस पॉलिथीन में कूड़ा भरा हुआ होता है वह बहुत कमजोर होती है। अगर किसी दिन घर से बाहर कूड़ा ले जाते वक्त पॉलिथीन फट जाती है, तो हम लोगों से ही उस घर का मालिक साफ सफाई करवाता है। इतना ही नहीं जिन स्थान पर हमलोग कूड़ा उठाने के लिए जाते हैं, वह हमारे घर से लगभग आठ नौ किलोमीटर है दूर है। वहां से हमलोग रिक्षा पर लाद कर लाते हैं। रास्ते में लाते वक्त काफी तकलीफ होती है, जैसे कि सड़क पर काफी गाड़ियां भी चलती हैं। हमें हर वक्त डर लगा रहता है, कहीं हमारे साथ दुर्घटना ना हो जाए। 26 वर्षीय श्रीमती कविता देवी जी ने बताया कि हम अपने गांव से यहां अच्छी जिंदगी जी रहे हैं। हमारे बच्चे भूखे तो नहीं रहते हैं। हमारे परिवारों के कुछ बच्चे स्कूल भी जाने लगे हैं। इन परिवारों को सिर्फ काम करना पड़ता है। इनके रहने की व्यवस्था पूरी तरह इनका मालिक करता है। इन लोगों ने कहा कि दिल्ली आकर हमारी जिंदगी बदल गयी है।

क्या उजाला का सपना होगा पूरा ?

बातूनी रिपोर्टर: उजाला व रिपोर्टर: दीपक

यह दुखद खबर 10 वर्षीय उजाला की है। उजाला अपने माता-पिता के साथ पश्चिम दिल्ली में रह रही है। पिता सीमेंट के गोदाम में बड़ी-बड़ी गाड़ियां लोड करते हैं। उससे जो पैसे मिलते हैं उनसे उजाला के परिवार का खर्चा मुश्किल से चल पाता है। उजाला की माता की आदत बहुत खराब है, वह सारे दिन पड़ोस के घर में बैठी रहती हैं और पड़ोसियों के साथ गर्भे मारती रहती हैं। उन्हें घर-परिवार से कोई मतलब नहीं। उजाला के पिता अपने काम से थके घर लौटते हैं, तो उनको खाना-पीना भी नहीं देती। उजाला ही घर का सारा कामकाज करती है तथा खाना भी खुद बनाती है।



को बहुत गुस्सा आया और अपनी पतिन को बुरी तरह से मारा-पीटा, उजाला की मां पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। इस बस्ती में रहने वाले कुछ बच्चे पढ़ाई-लिखाई करने के लिए स्कूल जाते हैं। इन्हें देख उजाला के मन में भी लालसा आई कि काश मैं भी

इनकी तरह स्कूल जा पाती। इसी लालसा को लेकर उसने अपने पिता से बात की कि मुझे भी पड़ोसियों के बच्चों की तरह स्कूल जाने का मन होता है। इस बात से उजाला की माता असहमत थीं। उन्होंने उसी वक्त बोला कि अगर यह स्कूल चली जाएगी तो घर का कामकाज कौन करेगा ? और हमारे जो दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनकी देखभाल कौन करेगा ? उजाला ने बताया कि अब मेरा स्कूल जाने का सपना एक सपना बनकर ही रह गया है। वर्तमान में उजाला अपने दो छोटे भाईयों की देखरेख करती है व दिनभर घरेलू कामों में व्यस्त रहती है। उजाला जानना चाहती है कि पढ़ने-लिखने की उम्र में उस पर हो रहे पारिवारिक अत्याचार से क्या कभी उसे छुटकारा मिल पाएगा ? क्या वह भी कभी दूसरे बच्चों की तरह पढ़ाई कर सकेगी ? इस परेशानी से छुटकारा दिलाने में समाज और सरकार की भी कोई जिम्मेदारी बनती है ? और यदि बनती है तो उसे क्यों नहीं निभाया जा रहा है ? क्या वह अपने पढ़ाई के सपने को कभी पूरा कर पाएगी ?

बातूनी रिपोर्टर: प्रीति व रिपोर्टर: ज्योति

यह दर्दनाक हाल 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुनाली का है। हम आपको भूतकाल में ले जा रहे हैं। आज से चार साल पहले सुनाली अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी से रह रही थी। इनके पापा शहर में पैसे कमाने के लिए जाते थे और मम्मी घर में काम करती थी। सुनाली की मम्मी को टी बी की बीमारी थी और पैसों की कमी तथा लापरवाही की वजह से इनका इलाज नहीं हो पाया। इस कारण उनकी मृत्यु हो गई। जब यह बात सुनाली के पापा को पता चली तो वह शहर से फौरन घर आ गए।

क्या ऐसी भी होती हैं सौतेली मां ?

सुनाली की मम्मी का अंतिम संस्कार किया। सुनाली अपने परिवार में अकेली हो गई और घर की देखरेख करने वाला कोई नहीं था। सुनाली भी इतनी छोटी थी कि वह खाना-पीना भी बना नहीं पा रही थी। इस परेशानी को नजरंदाज करते हुए सुनाली के पापा ने दूसरी शादी कर ली। जिस औरत से सुनाली के पापा ने शादी की उसकी पहले से शादी हो चुकी थी और उसके पति की मृत्यु हो चुकी थी। दुख की बात यह है कि शादी करने के बाद भी इस समस्या का



समाधान नहीं निकला। सुनाली का कहना है कि शादी के बाद मेरे पापा दोबारा शहर गए और सौतेली मम्मी को घर की देखरेख करने के लिए छोड़ गए। कुछ दिन बीतने के बाद मेरी सौतेली मम्मी मुझ पर अत्याचार करने लगी। मेरी सौतेली मम्मी के पहले से ही पांच बच्चे थे। वह पापा के शहर जाने के बाद अपने बच्चों का ध्यान रखती थीं। इस समस्या को लेकर मैंने अपने पिता से बात भी करनी चाही तो मेरी सौतेली मम्मी मारने पीटने की धमकी देने लगी। इसी कारण मैंने

अपने घर में सारा काम करना शुरू कर दिया और भूखी प्यासी खामोश रहती थी। इतना अत्याचार होने के बावजूद मेरी सौतेली मम्मी ने मेरी शादी अपने भाई से करने को कहा। इस बात से मैं असहमत थी। क्योंकि जिसे मैं मामाजी कहकर बुलाती हूं उनसे मैं शादी कैसे कर सकती हूं। इस सब कारनामे को देखकर मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, तभी मैंने निर्णय लिया कि अब मेरे लिए यह सुरक्षित स्थान नहीं है। मुझे यहां से भाग जाना चाहिए, नहीं तो यह लोग मेरे साथ दुर्व्यवहार भी कर सकते हैं। वर्तमान में मैं रेलवे स्टेशन पर रह रही हूं और अपना पेट पालने के लिए पान की दुकान पर काम करती हूं।



जीवन कौशल मीटिंग के दौरान अपनी समस्या बताते हुए बढ़ते कदम के बालसाथी



नशा, भीख और बाल मजदूरी से छुटकारा पाने के लिए सड़क पर आने-जाने वाले यात्रियों को जागरूक करते बाल साथी



बाल समूह में नेतृत्व उभारने हेतु प्रशिक्षण देते बालकनामा के पत्रकार



स्टैंड चार्टर्ड बैंक में विजिट कर बैंक कर्मियों की कार्यशैली की जानकारी प्राप्त करते बालसाथी

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पॉन्सर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।